Sixteenth Loksabha

an>

Title: Need for separate Religious Code for data analysis and socio-economic development of tribals in the country.

श्री विजय कुमार हांसदाक (राजमहल): मैडम, मैं एक विशेष मुद्दे पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। आदिवासी काफी समय से अलग धर्म कोड की मांग कर रहे हैं – सरना धर्म कोड। धर्म कोड नहीं होने की वजह से कई राज्यों में आदिवासियों को हिन्दू धर्म में लिखा जाता है, जो कि वे हैं नहीं। सरना धर्म और सनातन धर्म, दोनों अलग हैं। हम लोग अपनी जाति के रूप में आदिवासी लिखते हैं। कई जगह पर जाति और धर्म के नाम पर कन्फ्यूजन क्रिएट कर जनगणना को प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है। मैं चाहता हूं कि जाति के आधार पर आदिवासियों की गणना हो। मैं सदन के समक्ष यह बात बोलना चाहता हूं कोर्ट भी इस बात को एक्सेप्ट कर चुकी है कि आदिवासी इस देश के फर्स्ट इंडिविजुअल्स हैं। कई कानून, जो आदिवासियों को बचाने के लिए कई राज्यों में बने हुए हैं जैसे फिफ्थ शिड्यूल, सिक्स्थ शिड्यूल, पीईएसए, सीएनटी एंड एसपीटी एक्ट आदि सभी के साथ लगातार छेड़छाड़ हो रही है, इन्हें कमजोर करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हें बचाने की जरूरत है।

आदिवासी, जिनका इतिहास बहुत रिच है। आजादी की पहली लड़ाई, अगर हम अपने देश में ही इसे एक्सेप्ट नहीं करेंगे तो बाहर के लोग इसे कैसे जानेंगे, 1857 की लड़ाई को देश की आज़ादी की पहली लड़ाई मानी जाती है, लेकिन 1855 की सिद्धू-कान्हू जी की 'हुल क्रान्ति' अंग्रेजी के खिलाफ आज़ादी की पहली लड़ाई है। मैं सदन के माध्यम से कहना चाहता हूं कि आज इसे पूरे देश की हिस्ट्री की किताबों में पढ़ाया जाना चाहिए। यही मांग रखकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष :

श्री जितेन्द्र चौधरी,

कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल,

शंकर प्रसाद दत्ता,

श्री मोहम्मद बदरुद्दोज़ा खान,

डॉ. कुलमणि सामल,

श्री निशिकान्त दुबे और

श्री पी.आर.सुन्दरम को श्री विजय कुमार हांसदाक द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।